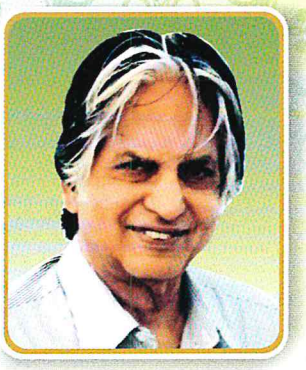

Shri Rangarajan Vasudevan (Posthumous)

Shri Rangarajan Vasudevan is one of India's finest Civil Servants. His career spanning over 36 years was truly a life of high principle, simple living worthy of emulation.

2. Born on June 14, 1937, Shri Vasudevan joined the Indian Administrative Service (IAS) in 1959, after a brilliant academic career at the University of Madras and the Delhi School of Economics, where he took a Masters in Economics. He joined Indian Administrative Service in 1959 and was allotted to the Uttar Pradesh cadre, where he worked with distinction in various departments including the Home Department, GAD (General Administrative Department) and the Sugar Department. As Sugar Secretary of the U.P. Government, he helped create a progressive sugar industry in the state of Uttar Pradesh.

3. In the Government of India, Shri Vasudevan served as the Planning Commission in-charge of the newly created 'Hill Areas Division'. Here he designed a template for policies to promote the balanced and equitable development of the hilly areas of the country. He served in the Ministry of Home Affairs, Govt. of India in the difficult time when the country faced the threat of left-wing extremism. He also served as Joint Secretary in the Ministry of Energy and Ministry of Petroleum and Natural Gas. His contributions as Additional Secretary and Special Secretary in the office of the Prime Minister of India have been exceptional. As Special Secretary to the Prime Minister, he contributed enormously, at the highest level of the Government of India to policy making as well as to the effective implementation of policy.

4. Shri Vasudevan became Secretary of the newly created Department of Small and Medium Enterprises in 1990 and then in 1991-1992 he served as the Secretary, Ministry of Steel. His last posting in 1995 was as Secretary, Ministry of Power, Government of India.

5. During his years in the Central Government, Shri Vasudevan rationalized Government policies for imports of petroleum products giving the process credibility and transparency. These policy changes have stood the test of time, and have been the norm over three decades. As Secretary, Ministry of Steel, he initiated pioneering reforms for the liberalizations of the Steel sector which have led to India becoming one of the largest Steel producers in the world. As Secretary, Ministry of Power, he reformed the electricity sector's regulatory frame work, this paved the way for creation of a national market for electricity in India.

6. After retirement from the civil service, he continued his contribution to improving public policy through chairing a number of high level committees in the infrastructure sector.

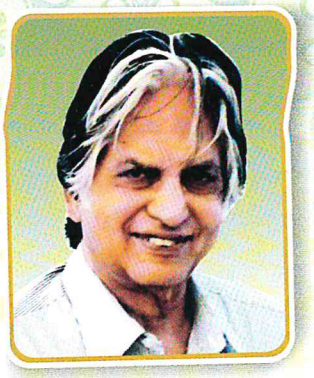

श्री रंगाराजन वासुदेवन (मरणोपरांत)

श्री रंगाराजन वासुदेवन भारत के उत्कृष्ट सिविल सेवकों में से एक हैं। आपका 36 वर्षों से भी अधिक लम्बा सेवाकाल सच्चे अर्थों में आपके ऊँचे सिद्धांतों, सादा जीवन और श्रेष्ठ प्रतिस्पर्धा से परिपूर्ण रहा।

2. आपका जन्म 14 जून, 1937 को हुआ था। आपने मद्रास विश्वविद्यालय तथा दिल्ली स्कूल ऑव इकोनोमिक्स, जहां से आपने अर्थशास्त्र में परास्नातक की उपाधि प्राप्त की थी, से शानदार शैक्षणिक कॅरिअॅर अर्जित करने के बाद आप वर्ष 1959 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई ए एस) में आए। आपने वर्ष 1959 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदभार ग्रहण किया और उत्तर-प्रदेश-संवर्ग के लिए आपकी सेवाएं सुपुर्द की गई, जहां आपने गृह विभाग, जी ए डी (सामान्य प्रशासनिक विभाग) तथा शर्करा विभाग सहित विभिन्न विभागों में विशिष्ट योग्यता के साथ कार्य किया। उत्तर प्रदेश सरकार के शर्करा सचिव के रूप में आपने उत्तर प्रदेश राज्य में एक प्रगतिशील शर्करा उद्योग के सृजन में मदद की।

3. भारत सरकार में, आपने नव-सृजित 'पहाड़ी क्षेत्र प्रभाग' के लिए योजना आयोग प्रभारी के रूप में कार्य किया। यहां आपने देश के पहाड़ी क्षेत्रों के संतुलित एवं न्याय संगत विकास को प्रोत्साहित करने हेतु नीतियों का एक सांचा डिजाइन किया था। आपने भारत सरकार के गृह मंत्रालय में भी उस कठिन समय में कार्य किया था जब देश वामपंथी उग्रवाद के संकट का सामना कर रहा था। आपने ऊर्जा मंत्रालय तथा पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय में भी कार्य किया है। भारत के प्रधानमंत्री कार्यालय में अपर सचिव तथा विशेष सचिव के पद पर कार्य करते हुए आपने असाधारण योगदान दिया। प्रधानमंत्री के विशेष सचिव के रूप में आपने भारत सरकार के सर्वोच्च स्तर पर नीति निर्माण करने के साथ-साथ नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में वृहत योगदान किया।

4. आप वर्ष 1990 में नव सृजित लघु और मध्यम उद्यम विभाग के सचिव बने और इसके बाद वर्ष 1991-1992 में आपने सचिव, इस्पात मंत्रालय के पद पर कार्य किया। वर्ष 1995 में आपकी अंतिम तैनाती सचिव, ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के पद पर हुई थी।

5. केन्द्र सरकार में तैनाती के दौरान आपने प्रक्रिया को विश्वसनीय और पारदर्शी बनाते हुए पेट्रोलियम उत्पादों के आयात संबंधी सरकारी नीतियों को तर्कसंगत बनाया। नीतियों में किए गए ये बदलाव समय की कसौटी पर खरे उतरे और तीन दशकों से भी अधिक समय तक मानक के रूप में बने रहे। इस्पात मंत्रालय के सचिव के रूप में कार्य करते हुए आपने इस्पात क्षेत्र के उदारीकरण के लिए प्रायोगिक सुधारों की शुरूआत की जिसके परिणाम स्वरूप भारत दुनिया के सबसे बड़े इस्पात उत्पादकों की श्रेणी में आ गया। ऊर्जा मंत्रालय के सचिव के रूप में आपने बिजली क्षेत्र के नियामक ढांचे में सुधार किया जिससे भारत में बिजली के लिए एक राष्ट्रीय बाजार के सृजन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

6. सिविल सेवा से सेवा-निवृत्त होने के बाद भी बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में कई एक उच्च स्तरीय समितियों की अध्यक्षता के माध्यम से आप लोक-नीतियों के सुधार में निरंतर अपना योगदान जारी रखे हुए हैं।